The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के जनजातीय वीरों का योगदान

करिष्मा मार्के (षोधार्थी–हिन्दी)
अटल बिहारी वाजपेयी विष्व विद्यायलयए बिलासपुर (छ.ग.)
डॉ. सुनंदा मरावी (षोध निर्देषक)
(सहायक प्राध्यापक), शा.ई.राघवेन्द्र राव पी.जी. साइंस कॉलेज बिलासपुर (छ.ग.)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18648096

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-01-2026

Published: 10-02-2026

Keywords:

ABSTRACT

छत्तीसगढ़ का इतिहास जनजातीय संघर्ष, स्वाभिमान और स्वतंत्रता चेतना से समृद्ध रहा है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की जनजातियों ने जो प्रतिरोध किया, वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक सशक्त किंतु उपेक्षित अध्याय है। छत्तीसगढ़ में गोंड, मुरिया, हल्बा, बैगा, कंवर, उरांव आदि जनजातियाँ निवास करती हैं। इन समुदायों का जीवन जल–जंगल–जमीन से गहराई से जुड़ा रहा है। ब्रिटिश शासन द्वारा लगाए गए कर कानून, वन व्यवस्थाएँ, बेगार प्रथा और प्रशासनिक हस्तक्षेप ने जनजातीय जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित किया। इसके परिणामस्वरूप जनजातीय समाज में विद्रोह और प्रतिरोध की चेतना विकसित हुई, जो स्वतंत्रता आंदोलन का प्रारंभिक आधार बनी। छत्तीसगढ़ के जनजातीय वीरों ने केवल सशस्त्र संघर्ष ही नहीं बल्कि कर बहिष्कार, बेगार विरोध, प्रशासनिक आदेशों की अवहेलना और सांस्कृतिक एकता के माध्यम से भी ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। उनके संघर्ष स्थानीय थे किन्तु उनका उद्देश्य व्यापक राष्ट्रीय स्वतंत्रता से जुड़ा हुआ था। दुर्भाग्यवश मुख्य–धारा के इतिहास लेखन में इन योगदानों को सीमित स्थान मिला। स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के जनजातीय वीरों में **वीरनारायण सिंह–सोनाखान** के जमींदार का नाम विशेष रूप से आता है। उन्हें छत्तीसगढ़ का प्रथम स्वतंत्रता सेनानी कहा जाता है। इनके अलावा बस्तर क्षेत्र में **हल्बा विद्रोह** अजमेर सिंह के नेतृत्व में मराइठा व ब्रिटिष सेनाओं के खिलाफ, लेकिन इसे दबा दिया गया। **लिंगागिरी विद्रोह–1857** के

समय–**धुरुवाराव माड़िया** के नेतृत्व में ब्रिटिशों से जमीन व अपने अपने अधिकार के लिए संघर्ष किये। **कोई विद्रोह, भूमकाल विद्रोह, परल कोट विद्रोह** और न जाने छत्तीसगढ़ के इतिहास में ऐसे कितने विद्रोह हुए जिसमें जनजातीय अपनी जमीन, जंगल के लिए बिटिशों लोहा लिये। इस तरह जनजातियों का स्वतंत्रता संग्राम केवल हथियार बंद विद्रोह नहीं था, बल्कि स्वाभिमान, आत्मसम्मन और सांस्कृतिक स्वतंत्रता की चेतना का प्रतीक था।

भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम वह ऐतिहासिक आंदोलन था, जिसके माध्यम से भारत की जनता ने लगभग 200 वर्षों के ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष किया। यह केवल सत्ता परिवर्तन की लड़ाई नहीं थी, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान, सामाजिक न्याय, आर्थिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक पहचान की रक्षा का व्यापक आंदोलन था। अंग्रेजों ने भारत में व्यापार के नाम पर प्रवेश किया और धीरे–धीरे समूचे भारत में अपना अधिकार जमा लिया, भारत में शासन स्थापित करने के बाद शोषण और दमन की नीतियां अपनाईं। किसी भी वर्गों को नहीं छोड़ा, भारतीयों पर जिस तरीके से अत्याचार कर सकते थे भरपूर कसर निकाली गई। किसानों से भारी कर वसूले जाते, भारतीय उद्योग धंधों को नष्ट किया गया तथा उन्हें शासन व्यवस्था से दूर रखा गया, इससे जनता में असंतोष फैलता गया। यही असंतोष धीरे–धीरे स्वतंत्रता आंदोलन का रूप लेने लगा। भारत के अलग–अलग हिस्सों पर अंग्रेजों के दमन के लिए विद्रोह होने लगा, यही चिंगारियों ने स्वतंत्रता आंदोलन को हवा देने का काम किया। **"भारत में राष्ट्रवाद के जन्म के कारण जो राष्ट्रीय आंदोलन प्रारंभ हुआ वह विश्व में अपने आप में अनूठा आंदोलन था।"**[1]

इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए खंडित भारत एक सूत्र में बंधकर अंग्रेजों का सामना किया। न जाने कितने वीर शहीद हुए, कितनी ही लाशें गिरीं, तथा इस आंदोलन में अनेक जनजाति वीरों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति वीरों का योगदान

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के जनजातीय वीरों का योगदान अत्यंत साहसपूर्ण और प्रेरणादायक रहा है। घने जंगलों, पहाड़ों और दूरस्थ अंचलों में रहने वाले जनजातीय समाज ने अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीतियों का डटकर विरोध किया। प्रारंभ 1857 की स्वतंत्रता संग्राम की क्रांति से हुआ, जिसने पूरे भारत के अलग–अलग हिस्से को हिला कर रख दिया।

"1857 का विद्रोह के कारणों में अनेक कारण थे लेकिन कुछ कारणों से इस आन्दोलन ने राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया और भारत वर्ष को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। ऐसा लगता है कि 1857 की क्रांति के कारण ही भारत 1947 को आजाद हो गया अन्यथा आजादी के सवेरे के लिए न जानें कितने और दिन तरसना पड़ता।"[2]

1857 की क्रान्ति भले ही असफल रही, लेकिन इसने भारत में स्वतंत्रता की भावना को प्रबल किया और भविष्य के आन्दोलनों का मार्ग प्रशस्त किया।

वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ के सबसे प्रसिद्ध जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी थे, छत्तीसगढ़ के वर्तमान बलौदाबाजार में सोनाखान स्थित है जहाँ पर 1830 में वीर नारायण सिंह जमींदार बने। 1856 में भीषण अकाल के कारण लोग भूख के कारण मरने लगे, कसडोल के एक ग्राम में माखन लाल बनिया के गोदाम से अनाज लूट कर जनता में बाँट दिया, यह बात जब रायपुर के डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स इलियट तक पहुँची तो उन्हें यह रास नहीं आई।

"आंग्ल सरकार ने वीर नारायण सिंह के इस कार्य को कानून विरोधी समझा एवं व्यापारी के रिपोर्ट के आधार पर वीर नारायण सिंह को गिरफ्तार कर लिया।"[3] चोरी के इल्जाम में वीर नारायण को 24 अक्टूबर 1856 को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। दस महीने 4 दिन बाद 28 अगस्त 1956 को वीर नारायण सिंह साथियों की मदद से जेल तोड़कर भाग गये। अंग्रेजों के द्वारा लोगों पर किये जा रहे अत्याचार को देखकर 2 दिसम्बर 1856 को वीर नारायण सिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया। 10 दिसम्बर 1857 को रायपुर के जयस्तंभ चौक पर फाँसी दे दी गई। **"छत्तीसगढ़ के इस प्रथम शहीद की प्रेरणा ने कालांतर में लोगों को जागृत किया, सोनाखान ने इतिहास में छत्तीसगढ़ को गौरवपूर्ण स्थान दिलाया।"**[4]

वीर नारायण सिंह ने अन्याय, शोषण और विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष कर छत्तीसगढ़ को गर्व दिलाया इसलिए **इन्हें छत्तीसगढ़ का प्रथम स्वतंत्रता सेनानी और सच्चा वीर सपूत कहा जाता है।**

2. धुर्वा राव माड़िया – बस्तर क्षेत्र में हुए **लिंगागिरी विद्रोह** के प्रमुख नेतृत्वकर्ता धुर्वा राव हैं। लिंगागिरी विद्रोह 1856 में बस्तर के आदिवासियों द्वारा ब्रिटिश शासन और उनकी शोषणकारी नीतियों के विरोध में किया गया। इस समय यहाँ के शासक भैरम देव थे। इस विद्रोह का कारण अंग्रेजों द्वारा लिंगागिरी क्षेत्र में हस्तक्षेप कर, आदिवासियों का शोषण एवं भू–राजस्व में वृद्धि के विरोध में किया गया विद्रोह था। जिसके नेतृत्वकर्ता **धुर्वा राव माड़िया** थे। इस विद्रोह को बस्तर का महान मुक्ति संग्राम कहा जाता है। धुर्वा राव को बस्तर का **दूसरा शहीद माना** जाता है। **"इस विद्रोह के नेतृत्वकर्ता धुर्वा राव माड़िया लिंगागिरी के तालुकेदार थे। वे लिंगागिरी को अंग्रेजों से मुक्त रखना चाहते थे। धुर्वा राव माड़िया ने दोरला, माड़िया, मुरिया जनता के लोगों को संगठित कर संघर्ष प्रारंभ किया जिसे लिंगागिरी विद्रोह के नाम से जाना जाता है जो लगभग दो वर्ष तक चला। अंग्रेजों द्वारा धुर्वा राव को षड्यंत्रपूर्वक पकड़कर एक ऊँचे साल पेड़ पर फाँसी दे दिया गया।"**[5]

3. **नांगूल दोरला** – बस्तर संग्राम में नांगूल दोरला का नाम बहुत महत्वपूर्ण है, जिन्होंने **कोई विद्रोह (1859)** का नेतृत्व किया और अंग्रेजी प्रशासन द्वारा साल वनों की अवैध कटाई के विरोध में यह विद्रोह हुआ। वनों की रक्षा का यह प्रथम विद्रोह था, जिसमें **"एक साल वृक्ष के पीछे एक सिर"** का नारा दिया गया। आदिवासी संगठित होकर इस

विद्रोह को अंग्रेजों के खिलाफ ''एक वृक्ष के पीछे एक अंग्रेज का सिर'' इस नारे के तहत आदिवासी नायक नांगूल दोरला के नेतृत्व में सफल विद्रोह था। इसमें अंग्रेजों की हार हो गई।

4. झाड़ा सिरहा – आदिवासी नायक झाड़ा सिरहा जिसने अंग्रेजों के शोषण, क्रूरता, बस्तर रियासत के दीवान गोपीनाथ कपड़दास का अत्याचार, तत्कालीन भू–राजस्व व्यवस्था, अंग्रेजी सरकार का राजा भैरवदेव के जीवन में व्यक्तिगत हस्तक्षेप, तथा अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति के कारण परेशान आदिवासियों के साथ मिलकर विद्रोह किया। **जिसे मुड़िया विद्रोह (1876)** कहा गया, जिसके मुख्य नेतृत्वकर्ता झाड़ा सिरहा थे। हालांकि इस विद्रोह को अंग्रेजों द्वारा दमन कर दिया गया।

5. गुंडाधुर – बस्तर संग्राम के महान नायक **भूमकाल (1910)** विद्रोह के नेता हैं। गुंडाधुर धुरवा जनजाति से थे। भूमकाल विद्रोह मुख्यतः अंग्रेजों के विरुद्ध उनकी कूटनीति के खिलाफ लड़ा गया प्रसिद्ध विद्रोह है, जिसका नेतृत्व गुंडाधुर ने किया। इस समय बस्तर में रुद्र प्रताप सिंह देव शासक थे। बस्तर पर अंग्रेजों का हस्तक्षेप, अंग्रेजों द्वारा जनता का शोषण, दोषपूर्ण भू–राजस्व व्यवस्था, वन उपयोग पर प्रतिबंध लगाना, बेगारी प्रथा का प्रचलन, आदिवासियों को गुलाम समझना, पुलिस कर्मियों द्वारा अत्याचार करना, ईसाई मिशनरियों द्वारा आदिवासियों का धर्म परिवर्तन करने पर बाध्य करना इत्यादि कारणों ने भूमकाल विद्रोह को जन्म दिया।

''गुंडाधुर के नेतृत्व में आदिवासियों ने 1 फरवरी 1910 को अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह प्रारंभ किया। विद्रोह एक साथ कई केन्द्रों पर प्रारंभ हुआ जिसके कारण उस दिन अंग्रेजी सैन्य शक्ति को सँभलने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। विद्रोह इतना भयंकर था कि ऐसा लग रहा था कि भूमि कंपन कर रही है। भूमि कंपन से तुलना किए जाने के कारण इस विद्रोह का नाम भूमकाल विद्रोह पड़ा।''[6]

यह आदिवासियों द्वारा पहला संगठित विद्रोह था। गुंडाधुर बस्तर में ब्रिटिश विरोधी जन जागृति आंदोलन के प्रणेता माने जाते हैं। इस विद्रोह में लाल मिर्च, आम की टहनी, **मिट्टी का ढ़ेला, तीर–धनुष–भाला** प्रतीक चिन्ह थे। इस विद्रोह में सोनू मांझी की मुखबिरी से कैप्टन गेयर द्वारा दमन कर दिया गया, बहुत से आदिवासियों की मृत्यु हो गई और गुंडाधुर को भागना पड़ा।

निष्कर्षः– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल नगरों, शिक्षित वर्ग या संगठित आंदोलनों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसकी जड़ें वनों, पहाड़ों और जनजातीय अंचलों तक गहराई से फैली हुई थीं। छत्तीसगढ़ के जनजातीय वीर इस संग्राम की आत्मा थे। उनका योगदान केवल अतीत की गौरवगाथा नहीं बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा है। जहाँ मध्य छत्तीसगढ़ में वीर नारायण सिंह ने संग्राम में भूमिका निभाई, वहीं बस्तर में कई वीरों ने अंग्रेजों से लोहा लेकर स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये।

संदर्भ

- भारतीय राष्ट्रवाद का उदय, दूरस्थ षिक्षा निर्देषालय, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, पेज नं. 9।
- देव, ऋषि कुमार, International Journal of Research in Social Sciences, May-2019, पेज नं. 1138।
- छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, ''समग्र छत्तीसगढ़'', पेज 120,
- समग्र छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पेज–121,
- बस्तर क्षेत्र आदिवासी विकास प्राधिकरण, बस्तर संभाग, जगदलपुर (छ.ग.)
- "AMOGHUARTA" ,June to August 2023, पेज नं. 206